Sanskritaseva Avashyaka Nivedana Bharata Ke Shiksha Vibhaga Se

संस्कृतसेवा आवश्यक निवेदन भारत के शिक्षा विभाग से

Document Information

Text title : Sanskritaseva Avashyaka Nivedana Bharata Ke Shiksha Vibhaga Se

File name : sanskRRitasevAAvashyakanivedanabhAratakeshikShAvibhAgase.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

संस्कृतसेवा आवश्यक निवेदन भारत के शिक्षा विभाग से

भारत के शिक्षाविभाग में संस्कृत का है जैसा स्थान,
भारत की ही पूज्य भारती का वह है क्या समुचित मान ?
राज्यकोश में क्या संस्कृत का अब कुछ अंश नहीं अवशेष,
क्या इसमें कुछ धन देने से निर्धन हो जायेगा देश ? । १
संस्कृत के विद्वान नहीं है क्या कुछ खाते पीते,
क्या उनके परिवार नहीं हैं ? कैसे हैं वे जीते ।
कभी किसी मन्त्री ने आकर देखा है उनका संसार ?
जीर्ण सदन, अतिसीमित साधन, चिन्ताम्लानवदन परिवार ? । २
उनका तो बस दोष यही कि दुःख शान्ति से सहते हैं,
अहोरात्र पर इस भारत की निधि की रक्षा करते हैं ।
ऐसा कौन राष्ट्र का सेवक सच्चा होगा वीर महान,
जिनके अद्भुत त्याग-तपस्या का करते वैदेशिक गान । ३
उनकी ही दयनीय दशा यह क्या है गौरव की कुछ बात,
उनकी सेवा का प्रतिफल ही है क्या उन पर यह आघात ?
अरे आज भी तो कुछ उनके साथ चाहिये करना न्याय,
इस मानवता के युग में भी ऐसा यह भीषण अन्याय ? । ४
मत उनको अब आप दीजिये त्याग-तुष्टि की शिक्षा,
दया-दान की भी अब वे हैं नहीं माँगते भिक्षा
किन्तु राष्ट्र की सेवा में है यदि उनका भी कुछ अवदान,
तो उनके जीवन का भी तो करे राष्ट्र समुचित सम्मान । ५

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskritaseva Avashyaka Nivedana Bharata Ke Shiksha Vibhaga Se

pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*